आपातकाल में सृजन फुलवारी

किरण मोर

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

किरण मोर

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-112-1

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020 किरण मोर

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY KIRAN MOR

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	खुदा बताओ कहाँ नहीं है	6
2.	क्यूं मन का मृग भागे	7
3.	प्रतीक	8
4.	टुकड़े उजास के	9
5.	कसाई	10
6.	तेवर	11
7.	ग़ज़ल	12
8.	तुझे मैंने देखा आज	13
9.	निश्चल प्रेम	14
10.	मिसाल एकता की	15
11.	दोनों किनारे	16
12.	पिया	17
13.	सच	18
14.	आशा	19
15.	भक्ति	20
16.	मंजिल	21

खुदा बताओ कहाँ नहीं है

सृष्टि के हर कण कण में, जीव जगत के हर जीवन में,
प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में, पल में बदल कर एक दूजे को,
इधर उधर वह कहाँ नहीं है, खुदा बताओ कहाँ नहीं है।

पत्ता पत्ता डाली डाली, सूखी दूब या हो हरियाली,
लहराती फसल है या फिर, कोई जमीन है बंजर खाली,
ऐसा नहीं वह वहाँ नहीं है, खुदा बताओ कहाँ नहीं है।

सूर्य वही है चंद्र वही है, धरती और आकाश वही है,
दिन और उसी के सदके, तारों की चमक उजास वही है,
वो है,सारा जहाँ वहीं है, खुदा बताओ कहाँ नहीं है।

मानव मन में जीव जंतु में, कोशिकाओं में हर तंतु में,
नींद से बोझिल पलक मूंद में, बहते रक्त की बूंद बूंद में,
हृदय स्पंदन उसके बिन हुआ नहीं है, खुदा बताओ कहाँ नहीं है

मन मंदिर में वही बिराजे, घर आंगन में खुशियां साजे,
पात कहां उसके बिन खड़के, रंक हो फकीर राजे महाराजे,
कर्म भाव से आती रजा यहीं है, खुदा बताओ कहाँ नहीं है।

सांसों की माला में अटका वह, बिखर जाए दे दे झटका वह,
उसकी रजा ले सिर आंखों पर, न माने बीच अधर लटका वह,
कौन है उसपर जो फिदा नहीं है, खुदा बताओ कहाँ नहीं है।

क्यूं मन का मृग भागे

तुझमें बसी सुगंध कस्तूरी, पहचान स्वयं को
ओ रे अभागे
क्यूं पीछे मन का मृग भागे?

रात सोये कल हो ना हो, सुंदर सपने पलकों पर तागे
क्यूं पीछे मन का मृग भागे?

बहुत सो लिया समय गंवाया,अब भी अगर न नींद से जागे
क्यूं पीछे मन का मृग भागे?

वक्त की चिड़िया जो उड़ जाए, फिर काय पछतायें लागे
क्यूं पीछे मन का मृग भागे?

किस्मत भी तब साथ है होती, वक्त संग जो चलता आगे
क्यूं पीछे मन का मृग भागे?

खींचे अपनी ओर ओ मनवा, बांधे हुए हैं मोह के धागे
क्यूं पीछे मन का मृग भागे?

प्रतीक

ताजमहल सम कौन है, शाहजहां बनवाय।
आज भी ऐसा प्रेम का, जो प्रतीक बन जाय।।

जो प्रतीक बन जाय, जहां में है वो न्यारा।
उस प्रीतम की याद, लगे जो सबसे प्यारा।।

लगे जो सबसे प्यारा, वो माँ का दुलारा।
सदा रहे उसकी छाया, बन चांद सितारा।।

बन चांद सितारा वो, पाए अनुपम प्यार।
अंत समय क्या फिर वही, करे उसका उद्धार।।

करे उसका उद्धार कब, बनाए कोई महल।
होते वह महबूब के, बनें जो ताजमहल।।

टुकड़े उजास के

जाम पर जाम पी लिए हैं,
क्यूं तूने अंधेरी आस के,
मान कर किस्मत उसे बैठ गया है,
बिन प्रयास के।

ढूंढने से तो भगवान भी मिलते हैं
जहाँ में,
बिन परिश्रम नहीं हैं जाते पल
कहीं भी संत्रास के।

उन दिनों को भूल जा,
वो दिन बीत गए हैं त्रास के,
सपनों में ही खिलते हैं बिन खाद पानी,
फूल अमलतास के।

भाग्य संग तू अपने जरा,
हाथों का श्रम देख जोड़कर,
तेरे हिस्से में भी आएंगे,
एक दिन कुछ टुकड़े उजास के।

कसाई

कहां खो गया वो अपनापन, मिल करते थे काज
सहानुभूति और दया, करुणा का होता था राज
आज लगे हैं एहसान जताने, गर दें भूखों को रोटी
उसको पल याद दिलाएं, ये सुबूत हो पास।

नेकी कर दरिया में डाल कथन कहीं जा गया सो
एक पैसा भी अब हाथ रखो मुस्कराते सेल्फी लो
क्यूं न हो भाई नेकी की है कुछ तो दिखाई दे
दिखलाएं उसे हम बड़े हैं, न कि हमसे बड़ा है वो।

रोते बिलखते देख बच्चे को तनिक शरम न आई
अपना नाम बढ़ाने को कुछ भी कर गुजरें भाई
होने वाला जैसे है इतिहास में दर्ज ये इनका नाम
खाना दिखाते ललचाते हैं बन गए हैं कैसे कसाई।

तेवर

कहीं हैं ज़माने में बेघर तो देखो
महलों से बाहर आकर तो देखो

मरेगा अहम एक दिन सर चढ़ा जो
दूजे के दर्द अश्रु बहाकर तो देखो

बनो ना मसीहा किसी जिन्दगी का
प्यार अपना जरा लुटाकर तो देखो

कभी न कभी फल भी मिलेंगे
सत्कर्मो के बीज बोकर तो देखो

तुमने किया और तुम्हारे लिए हैं क्या
पलटकर जमाने के तेवर तो देखो।

ग़ज़ल

कहीं तो शोख ग़ज़ल लगती है कभी कविता सी
इबारत कोई लिखी गई दीवार लगे जो गीता सी

कि जहां पांचाली लाई गई चीर हरण करने को
प्रेम में बिछड़ के राधे हृदय बसी पुनीता सी

कहीं शिव मान की खातिर अग्नि शिखा हुई
कहीं तज महल गई वन मर्यादा की सीता सी

चमक हीरे की बन शिरोमणि कभी कहलाई
कहीं राहों भटक रही है किसी परिणीता सी

कहीं वो बैठी है यूं ही महलों में सज धज कर
कहीं पथ भटक रही किस्मत किसी वनिता सी

ये हैं सब जीवन के पहलू दिखें एक एक कर
कभी है तम निशा का कहीं रोशन सविता सी।

अनुपम, दिव्य कृति वो प्रकृति का आधार है
जननी बन गढ़ती जग बहती कल कल सरिता सी।

तुझे मैंने देखा आज

तुझे मैंने देखा आज,
आई कैसी मुझे लाज
फिर भी लेकिन घर,
तेरे चला आऊंगा।

मांगूंगा मैं तेरा हाथ,
रहने को साथ साथ
तेरी फिर मांग भर,
अपनी बनाऊंगा।

रखूंगा तुझे मैं खुश,
चाहूं नहीं और कुछ
तेरी छवि पलकों पे,
अपनी सजाऊंगा।

कष्ट होगा नहीं कभी,
दिल में रहेगी सजी
तू जो होगी आग तो मैं,
पानी बन जाऊंगा।

निश्छल प्रेम

भरत के निश्छल प्रेम से, ऋषि मुनि गये हार।
कैकेई की भी आंख से से, बह रही अश्रुधार।।

गुरु वशिष्ठ भी बह गए, विकल देख सद्भाव।
राम, भरत, लक्ष्मण सहित,सहे जानकी घाव।।

कुटिल मति कैकेई की, भेजे राम वनवास।
राज अयोध्या भरत करे, लेकर मन में आस।।

रामायण से सीखिए, सदाचार संस्कार।
बंधु प्रेम प्रतीक बना, जीवन का आधार।।

पितृ वचन निभाने खड़े, भरत और राम।
दोनों के कर्त्तव्य बड़े, वानप्रस्थ अरु नाम।।

मिसाल एकता की

नौ दिये की रोशनी का
ये नया आगाज होगा
मिसाल एकता की बने
एक नया आयाम होगा।

रात को बंद कर दें रोशनी
मिल कर देंगे यही उजाला
जगमग होगा फिर भारत
मिटे कोरोना का तम काला।

रहकर घरों में अकेले ही
सारा देश रोशन कर देंगे
नौ-नौ दिए जलाकर, रात
नौ बजे उजाला भर देंगे।

दोनों किनारे

एक नदी के दोनों किनारे
अलग अलग से सदा बिचारे

कल कल बहते जल के धारे
बढ़ते जाएं चाल मतवारे

करता स्वागत बांह पसारे
जिसमें खोकर सब कुछ वारे

मिल जाते दो प्रियतम प्यारे
प्रेम न कोई जान सका रे

ऐसी नियति सबकी ही तय होती
कर प्रधान कर्म भली तय होती

दे जाते जो जग को रोशनी
जीवन उनके होते उजियारे।

पिया

पिया पिया कर कर
नाम तेरा रट कर
पांव रज तेरी मैंने
माथे पे लगाई है।

काहे दिल तोड़ दिया
बीच धार छोड़ दिया
बिना ही कसूर कोई
दे दी तनहाई है।

लड़े तेरे नैन कहां
जाता दिन रैन वहां
मेरे घर तूने मेरी
सौतन बुलाई है।

जाऊं अब किस ठौर
कहां मेरा कोई और
किससे कहूं कि मेरा
पिया हरजाई है।

सच

आज सच है मर गया
जहां में झूठ का है बोलबाला,
रावण कहां दहन होता
उसने राम को भी मार डाला।

कहां रचती है रास अब
कहां गए गोपी नन्द लाला,
कहीं वंशी की राग खोई
डी जे नाचे मानव बन मतवाला।

सुधा कलश है कहां मिले
मिलता है मद का ही प्याला,
भक्ति का सुरूर है अब नहीं
देती नशा है जाम-ए-हाला।

राजनीति चलती है यहां पर
एक दूजे पर फेंक भाला,
अखाड़े में चाहे जो भी आए
वो हो जीजा या कि साला।

आशा

मेहनत से रोटी जो खाए
कहलाए वही पूंजी जमा
आड़े टेढ़े रास्तों से वरना
कितनी दौलत करे जमा

कभी न कभी बिगड़ ही जाए
खाते ऐसी कमाई से हाजमा
रहे न खुश तन मन, फिर
चली जाए घर छोड़ रमा

बात वही दोहराता है लेकिन
वापिस ठाट बाट को कमा
दौड़ पड़े उस राह पर क्यूं तू
अंधेरी राह जला कर शमा

एक नहीं सौ राह मिलेंगी
शीश पर एक बार नवा
उससे कर करबद्ध निवेदन
आशा से आकाश थमा।

भक्ति

भक्ति की मिसाल है जो
उनका जन्मोत्सव हम आज मनाएं।

रुद्र हुआ अवतार चतुर्थ
महादेव के रुप से कपीश कहाएं।

सूर्य निगलने को आतुर
बज्र प्रहार करी हनु, हनुमान कहाएं।

अहमी रावण लंकापति
पूंछ जलाई, कपि सारी, लंका जलाएं।

लक्ष्मण को शक्ति लगी
संजीवनी बूटी का, पहाड़ उठाएं।

राम की भक्ति उचारे
संकट मोचन, रामदुलारे बजरंग कहाए।

और उदाहरण दूजा न कोई
राम से मुक्ति,
और
हनुमान जी से भक्ति पाएं।

मंजिल

चल पड़े जब सफर पे तो
कांटे क्या और फूल देखना

जीवन युद्ध उतर आए तो
भाले और क्या शूल देखना

देने को इम्तिहान आए हैं
कुछ तो प्रश्नों को हल करना

पीछे कदम नहीं लेंगे अब
पहुंच अपनी मंजिल ही रुकना

डटा रहा है हर पल में जो
जीत उसी को हासिल करना

बैठे बिठाए क्या मिला किसी को
मेहनत से खुद को काबिल करना

कठिनाई औ दुख ही ले जाते
बहता जहां सुखों का झरना

दिया ओखली सिर फिर
क्यों खाने मूसलों से डरना।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

किरण मोर

म.नं.६, रघुनाथ गंज वार्ड,
घण्टाघर, कटनी म.प्र.।

E-mail - kiranmor63@gmail.com
Mobile - 7987455322

हमारे देश पर पड़े कोरोना के संकट को देखते हुए लेखनी का रुख भी वहीं जाता था और सिर्फ इसी से निजात पाने की कवायद शुरू हो गई, नये, नियम लागू किए गए और इस कवायद में पूरा देश एकजुट होकर कार्य में सहयोग के साथ अपने घर में रहकर सहयोग कर रहे हैं, फिर भी कुछ ऐसे लोग भी हैं जो नहीं समझ रहे कि इसका असर आगे आने वाले समय के लिए खतरा भी हो सकता है और देश का नुकसान भी, वे शायद अपने को भारत से अलग मानते हैं, इसीलिए भारत में किसी भी तरह अराजकता फैलाने में अभी भी लगे हुए हैं, लेकिन जो सच में इस देश को अपनी मातृभूमि मानते हैं, वे अपने अपने कर्तृतव्यों का पालन कर रहे हैं। वातावरण भी स्वच्छ दिखाई दे रहा है।इसी का मिला-जुला रूप अपनी रचनाओं में उकेरा है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-112-1

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/